जी-20 : बदलती विश्व व्यवस्था का संकेत

– डॉ. ध्रुव कुमार

भारत की अध्यक्षता में इस वर्ष जी-20 देशों का शिखर सम्मेलन संपन्न हुआ है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में भारत द्वारा इस विशाल और प्रतिष्ठित समूह की अध्यक्षता करना कई मायनों में विशेष है। जब हमें 1 दिसंबर 2022 को अध्यक्षता मिली तो उस समय दुनिया कई मोर्चों पर अलग-अलग समस्याओं से घिरी हुई थी। निश्चित रूप से भारत भी न सिर्फ उन समस्याओं से जूझ रहा था, बल्कि दुनिया की अलग-अलग क्षेत्र में हो रही गतिविधियों का भारत पर प्रभाव भी पड़ रहा था। लेकिन उसके बावजूद भारत ने जी-20 की अध्यक्षता को एक अवसर के रूप में देखा। हमने इसे वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए प्लेटफार्म के रूप में देखा। अब जब जी-20 की अध्यक्षता धीरे-धीरे अपने समापन की ओर है तो यह उल्लेखनीय है कि भारत ने उन लक्ष्यों व समस्याओं पर सभी देशों से लगातार संवाद किया है जिन्हें देश ने जी-20 मीटिंग से पहले एजेंडे के रूप में तय किया था।

जी-20 अपने आकार और उद्देश्य की दृष्टि से दुनिया में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। जी-20, 19 देशों तथा यूरोपियन यूनियन का एक विशाल समूह है। आँकड़ों की बात करें तो यह संस्था दुनिया की लगभग दो तिहाई से अधिक जनसंख्या तथा साठ फ़ीसदी भूमि का प्रतिनिधित्व करती है। इसके अतिरिक्त जीडीपी के मामले में देखें तो यह संस्था दुनिया की जीडीपी का 80 प्रतिशत तक कवर करती है और अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भी इस संस्था की भागीदारी 70 प्रतिशत से अधिक है। एक संस्था के रूप में यह दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित समूहों में से एक है। भारत की अध्यक्षता के साथ अब पूरी दुनिया भारत और जी-20 को

भारत ने अपनी अध्यक्षता में जी-20 की छवि को पूरी तरह बदल दिया है। इससे पहले जी-20 का सम्मेलन जब भी होता था तो उसे वैश्विक लीडर्स की एक मीटिंग के रूप में देखा जाता था लेकिन आज जी-20 इन सबसे कहीं ऊपर पीपल्स फेस्टिवल के रूप में तब्दील हो चुका है। पहले जी-20 की बैठकों में जहाँ व्यापार, निवेश, बैंकिंग और वित्तीय सुविधाओं जैसे आर्थिक मुद्दों पर चर्चाएँ होती थीं तो वहीं आज उनके साथ-साथ खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, जलवायु परिवर्तन जैसे सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर भी चर्चा हो रही है। भारत ने अपनी अध्यक्षता के दौरान जिस प्रकार से अफ्रीकन यूनियन को जी-20 में शामिल करने की पैरोकारी की है वह वैश्विक विकास में थर्ड वर्ल्ड कंट्रीज की बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है।

नए नज़रिये से देख रही है तो एक बार फिर से इसके अतीत, वर्तमान और भविष्य और चुनौतियों और संभावनाओं पर विचार करने की जरूरत है। साथ ही यह भी विचारणीय है कि भारत द्वारा जी-20 की अध्यक्षता के मायने क्या हैं तथा इसके दुनिया पर क्या परिणाम और प्रभाव हो सकते हैं।

जी-20 पर बात करने के क्रम में पहला प्रश्न यही उठता है कि यदि संयुक्त राष्ट्र संघ जैसा एक प्रभावशाली संगठन दुनिया में पहले से ही विद्यमान है, तो जी-20 की आवश्यकता ही क्या थी। इसे इस रूप में देखा जा सकता है कि 1945 में जब संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई थी तो वह एक बिल्कुल अलग समय था। हम संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के उद्देश्यों का आकलन करें तो देखेंगे कि 1945 के पहले की दुनिया बिल्कुल अलग थी। वह एक ऐसी दुनिया थी जिसमें भौगोलिक और सैन्य शक्ति को प्राथमिकता दी जाती थी। ऐसी धारणाओं को दुनिया के अनेक विद्वानों ने बल भी प्रदान किया। मैकिंडर की 'हर्टलैंड थ्योरी' ने जहाँ यूएसएसआर और पूर्वी यूरोप